27.1

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।७।।

कार्पण्य=कृपणता; **दोष**=दोष से; **उपहत**=अभिभूत; **स्वभावः**=स्वभाव वाला; **पृच्छामि**=पूछता हूँ; **त्वाम्**=आपसे; **धर्म**=धर्म के विषय में; **संमूढचेताः**=मोहित चित्त हुआ (मैं); **यत्**=जो; **श्रेयः**=कल्याणीकारी मार्ग; **स्यात्**=हो; **निश्चितम्**=निश्चित; **ब्रूहि**=कहिये; **तत्**=वह; **मे**=मेरे लिए; **शिष्यः**=शिष्य; **ते**=आपका; **अहम्**=मैं; **शाधि**=शिक्षा दीजिये; **माम्**=मेरे को; **त्वाम्**=आपके; **प्रपन्नम्**=शरणागत हुए।

अनुवाद

प्रभो! कृपणता के कारण मैं स्वधर्म के सम्बन्ध में संमोहित हो गया हूँ और सब धैर्य भी खो बैठा हूँ। इसलिए आपसे पूछता हूँ, मेरे लिये जो निश्चय किया हुआ श्रेयस्कर साधन हो, वह कहिये। मैं आप का शरणागत शिष्य हूँ। अतएव कृपया मुझ को शिक्षा दीजिये।।७।।

तात्पर्य

यह प्रकृति का नियम है कि प्राकृत क्रियाओं की पूरी की पूरी व्यवस्था सब के लिये उद्वेग का ही स्रोत है। प्रतिपद पर व्याकुलता की ही प्राप्ति होती है। अतः जीवन की लक्ष्य-सिद्धि की यथार्थ शिक्षा के लिये प्रामाणिक गुरु के निकट जाना आवश्यक है। वैदिक शास्त्र जीवन के सम्पूर्ण अवाँछित उद्वेगों से मुक्ति के लिए आप्त सद्गुरु की शरण में जाने की आज्ञा देते हैं। अपने आप लगी दावाग्नि की भाँति संसार की व्यवस्था इस प्रकार की है कि हमारी इच्छा के विपरीत भी जीवन में उद्वेग अपने-आप उठते रहते हैं। दावाग्नि को कोई नहीं चाहता, फिर भी वह प्रज्वलित हो उठती है, जिससे हमें व्याकुलता होती है। इसी से वैदिक ज्ञान आज्ञा देता है कि व्यग्रता की निवृत्ति करने तथा समाधान की विद्या सीखने परम्परागत गुरु की शरण में जाय। सद्गुरु के आश्रित हुआ शिष्य सर्वज्ञ हो जाता है। इसलिए प्राकृत उद्वेगों में निमग्न न रहकर गुरु-शरण रूपी वैकुण्ठ का पादाश्रय अवश्य ग्रहण करे—यही इस श्लोक का तात्पर्य है।

संसार के उद्वेगों से कौन घिरा हुआ है? वह, जो जीवन के दुःखों के विषय में नहीं जानता। गर्गोपनिषद् में ऐसे मनुष्य को 'कृपण' कहा गया हैः

'यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदितवासमाल्लोकात्प्रैति स कृपणः'

'मानव देह को प्राप्त होकर भी जो जीवन के दुःखों को निवृत्त किए बिना स्वरूप-साक्षात्कार की विद्या को जाने बिना शूकर-कूकर के समान मृत्यु समय इस संसार को त्याग कर जाता है, वह कृपण है।' यह मानव देह जीव की सबसे मूल्यवान्